तृतीय अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय –III

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.0 भूमिका :

बिना किसी शोध समस्या के इधर–उधर की निरूददेशीय क्रियाओं से कभी–कभी चमत्कारिक परिणाम अवश्य प्राप्त हो सकते हैं, परन्तु अधिकांश स्थितियों में कोई सार्थक सामान्यकरण नहीं हो सकता। अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के लिये आवश्यक होता है कि शोधकार्य की एक व्यवस्थित रूपरेखा हों। अनुसंधान को दिशा प्रदान करने के लिये किसी शोध समस्या का होना नितान्त आवश्यक है। शोध समस्या के लिये हमें किन प्रक्रियाओं से गुजरना होगा यह शोधकर्ता को जानना अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तुत शोधकार्य में **''कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान–एक अध्ययन''** किया गया हैं इसके लिये प्रक्रिया के अंतर्गत न्यादर्श का चयन इनके परीक्षण एवं प्रदत्त तथा जानकारी संकलन हेतु अपनाये गये विधियों एवं माहिती विश्लेषण विधियों का वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

3.1 न्यादर्श का चयन :

किसी भी अनुसंधानकर्ता को शोधरूपी भवन बनाने के लिए न्यादर्श रूपी आधारशिला की आवश्यकता होती है। यह आधारशिला जितनी मजबूत होगी शोधकार्य उतना ही मजबूत होगा। आधुनिक युग में बहुतांश अनुसंधान प्रतिचयन रीति एवं न्यादर्श रीति द्वारा किये जाते हैं। सांख्यिकीय विधि का विश्वास है कि किसी क्षेत्र में वैज्ञानिक ढ़ंग से चुनी गई न्यादर्श इकाईयों वे सभी विशेषताएं पाई जाती है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। शोध अध्ययन के लिये पोरबंदर शहर के उन क्षेत्र 'बोखिरा' जहाँ पर ज्यादातर स्थानांतरित विद्यार्थियों है और आस-पास के क्षेत्रों से अन्य विद्यार्थियों जिस विद्यालय में अध्ययन करने हेतु आते हैं। उन 'बोरिखा' क्षेत्र में सरकारी एवं निजी विद्यालयों से "श्री कस्तूरबा प्राथमिक विद्यालय" का यादृच्छिक विधि से चयन किया। इन विद्यालय में अध्ययनरत् ऐसे स्थानांतरित एवं अन्य विद्यार्थियों का चयन किया गया जो कक्षा आठवीं में अध्ययन करते थे। न्यादर्श में कुल 20 विद्यार्थियों को लिया गया। जिसमें 10 स्थानांतरित तथा 10 अन्य विद्यार्थियों में शामिल थे।

3.2 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

शोधकर्ता ने उपयुक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए निम्न उपकरणों का उपयोग किया। शोधकार्य करते समय वैज्ञानिक विधि से नवीन प्रदत्त, जानकारी को संकलित करने हेतु कुछ मानकीकृत उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। सफल अनुसंधान के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने फोटोग्राफ्स तथा वीडियोंक्लीप्स के माध्यम से विद्यार्थियों का संदर्भीय ज्ञान की जानकारी एकत्रीकरण हेतु निम्नांकित उपकरणों का उपयोग किया।

(i) सहभागी अवलोकन (Participant Observation)

(ii) निर्धारित समूहचर्चा (Focus Group Dicussion)

(iii) असंरचित साक्षात्कार (Unstructured Interview)

Regional Institute of Education
LIBRARY

विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बारे में जानकारी एकत्रीकरण हेतु सत्रांत गुणपत्रक, विभिन्न विषयों का पाठ्यक्रम आदि का उपयोग किया गया।

(i) सहभागी अवलोकन :

अवलोकन मानव की इन्द्रियजन्य विशेषता है। आँखों से देखने को अवलोकन कहते हैं। मनुष्य स्वभावतः जिज्ञासु प्राणी है। जितना ही अधिक वह घटनाओं का निरीक्षण और परीक्षण करता है, उसकी जिज्ञासा उतनी ही बढ़ती जाती है। अवलोकन पद्धति का प्रयोग अति प्राचीन काल से होने के कारण **मोजर** ने इसे वैज्ञानिक अनुसंधान की 'शास्त्रीय पद्धति' कहा है। **जहोडा एवं कुक** ने लिखा है कि "अवलोकन केवल दैनिक जीवन की ही अत्यधिक व्यापक क्रिया मात्र नहीं हैं, यह वैज्ञानिक जांच का भी एक प्राथमिक यंत्र है।"

जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है कि सहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता अध्ययन की जाने वाली परिस्थितियों में स्वयं भाग लेता है और उस समूह का औपचारिक सदस्य बन जाता है। इस पद्धति का प्रयोग तब किया जाता है, जबकि अनुसंधानकर्ता उस समूह से स्वयं धुल-मिल जाता है, जिसका कि वह अध्ययन करना चाहता है। सहभागी अवलोकन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **लिण्डमैन** ने लिखा है, "सहभागी अवलोकन इस सिद्धान्त पर आधारित है कि किसी घटना का विश्लेषण तभी करीब-करीब शुरू हो सकता है। जब वह बाहय तथा आन्तरिक दृष्टिकोण से मिलकर बना हो। इस प्रकार उस व्यक्ति का दृष्टिकोण जिसने घटना में भाग लिया तथा जिसकी इच्छाएँ एवं स्वार्थ उसमें किसी न किसी रूप से निहित थे, उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से निश्चय ही कहीं अधिक यथार्थ व भिन्न होगा,

जो सहभागी न होकर केवल ऊपरी दृष्टा या विवेचनकर्ता के रूप में रहा है।"

सहभागी अवलोकन में निम्न विशेषताएँ पाई जाती हैं–

(i) इसमें अवलोकनकर्ता अध्ययन की जानेवाली इकाईयों के जीवन और कार्यो में क्रियाशील सदस्य के रूप में भाग लेता हैं और घुलमिल जाता है।

(ii) अध्ययन की जानेवाली इकाईयों के अनुसार ही सुख और दुःख की अनुभूत्ति करता है और समूह को अपना मानता है।

जॉन मैज के अनुसार– "जब अवलोकनकर्ता के हृदय की धड़कने समूह के अन्य व्यक्तियों के हृदयों की धकड़नों से मिल जाती हैं और वह बाहर से आया हुआ कोई अनजान नहीं रह जाता, तो यह जानना चाहिए कि उसने सहभागी अवलोकनकर्ता कहलाने का अधिकार प्राप्त कर लिया है।"

(ii) **निर्धारित समूहचर्चा** : निर्धारित समूहचर्चा में साक्षात्कारकर्ता तो एक ही होता है परन्तु उत्तरदाता एक से अधिक हो सकते हैं। उत्तरदाताओं का एक समूह भी हो सकता हैं। इसमें प्रश्नकर्ता या तो उत्तरदाताओं से बारी–बारी से प्रश्न पूछकर एक ही स्थान पर एवं एक ही समय में उत्तरदाताओं से निर्धारित विषय के सवालों का उत्तर प्राप्त कर सकता है या उत्तरदाताओं की तरफ से कोई एक व्यक्ति उत्तर देता है, व शेष या तो मौन रहकर उसका समर्थन करते हैं या उससे असहमत होने पर अपनी राय भी प्रकट कर सकते हैं। सम्पूर्ण समूह के संबंध में जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से ऐसी चर्चा का आयोजन किया जा सकता है।

निर्धारित समूहचर्चा में विश्वसनीय सूचनाऐं प्राप्त हो सकती है। दूसरें व्यक्तियों की उपस्थिति के कारण सूचनादाता गलत सूचनाएँ नहीं दे पाते। इसके अतिरिक्त ऐसे साक्षात्कारों में समय एवं धन कम खर्च होता है। सामूहिक साक्षात्कार के माध्यम से बड़ी संख्या में एवं विस्तृत क्षेत्र में उत्तरदाताओं से सूचनाएँ एकत्रित की जा सकती हैं। इसमें विभिन्न व्यक्तियों से, एक ही समय में, विषय के संबंध में साथ–साथ स्पष्टीकरण प्राप्त किए जा सकते हैं।

निर्धारित समूहचर्चा में प्रमुख कठिनाई लोगों को एक समय में एक जगह एकत्रित करने की तो है ही साथ ही उनसे प्राप्त सूचनाओं का सामान्य विश्लेषण भी कठिन है। इसके अतिरिक्त इतने व्यक्तियों के बीच व्यक्तिगत एवं गोपनीय सूचनाएँ प्राप्त करना भी संभव नहीं होता है। इस पद्धति का उपयोग करने में एक दोष यह भी है कि समूह के सभी सदस्य प्रश्नकर्ता के प्रश्न को ठीक तरह से समझ भी नहीं पाते। व्यापक एवं गहन अध्ययन की दृष्टि से भी यह पद्धति उपयुक्त नहीं की जा सकती है।

(iii) **असंरचित साक्षात्कार :** यह अनिर्देशित या अकेन्द्रित साक्षात्कार के समान होता है। यह अनौपचारिक साक्षात्कार होता है इसमें पूर्व से प्रश्नों का निर्धारिण नहीं होता। संबंधित प्रश्नों का साक्षात्कार के दौरान ही तत्कालन निर्माण कर लिया जाता है। इसमें साक्षात्कार अनुसूची नहीं होती। इसमें साक्षात्कारकर्ता अपनी कुशलता से परिस्थिति के अनुरूप प्रश्नों का निर्माण कर सूचनाएँ या जानकारी प्राप्त करता है।

इस तरह शोधकर्ता ने सहभागी अवलोकन, निर्धारित समूह चर्चा, सत्रांत गुणपत्रक, विभिन्न विषयों का पाठ्यक्रम, असंरचित साक्षात्कार आदि उपकरणों द्वारा विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय तथा संदर्भीय ज्ञान के बारे में जानकारी प्राप्त की।

3.3 प्रदत्तों/वृत्तांत का संकलन :

प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों का पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान जानने हेतु सत्रांत गुणपत्रक लिया गया जिसमें पाठ्यक्रम अनुसार विभिन्न विषयों में सत्रांत परीक्षा द्वारा पाये गये विद्यार्थियों के गुण शामिल थे और निर्धारित समूहचर्चा, असंरचित साक्षात्कार तथा सहभागी अवलोकन द्वारा जानकारी प्राप्त की गई। पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बारे में जानने के लिए अंकशास्त्रीय प्रयुक्ति औसत प्रतिशत का उपयोग किया गया तथा निर्धारित समूह चर्चा तथा सहभागी अवलोकन द्वारा प्राप्त जानकारी का सूक्ष्म स्तर पर विद्यार्थियों के संदर्भीय ज्ञान का अध्ययन करके गुणात्मक पृथककरण किया गया। संदर्भीय ज्ञान का अध्ययन करते समय विद्यार्थियों की कुछ क्रियायें फोटो तथा विडियोंक्लिप्स ली गई।

3.4 प्रदत्तों का सांख्यिकी उपयोग एवं वृत्तांत का पृथक्करण:

विद्यार्थियों के पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बारे में जानने हेतु प्राप्त सत्रात गुणपत्रक के द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु औसत प्रतिशत सांख्यिकी का उपयोग किया गया। तथा विद्यार्थियों के संदर्भीय ज्ञान के बारे में जानने हेतु प्राप्त जानकारियों को वृत्तांत के रूप में लिखकर इसका गुणात्मक पृथक्करण किया गया।

Regional Institute of Education
LIBRARY